International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 15-18

रीवा जिले के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर का अध्ययन

डॉ0 सर्वेश कुमार मिश्र
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर का अध्ययन पर आधारित है। "शिक्षा सबके लिये सब शिक्षा के लिये" विचार के आधार पर प्रत्येक बालक के लिए शिक्षा आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के लागू होने के साथ ही विद्यालयों को प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर को निर्धारित करने एवं उन्हें प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है। दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अर्थ अध्ययन करने वाले छात्र–छात्राओं को दी जाने वाली ऐसी शिक्षा है, जिससे उनमें विषय से सम्बन्धित समग्र ज्ञान हो जाय। निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर, उच्च शिक्षा व तकनीकी शिक्षा में प्रवेश के लिये पात्रता प्राप्त करना ही दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया की सार्थकता है। शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है और दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर में लगातार सुधार हो रहा है।

मूल शब्द : रीवा जिला, प्रारंभिक शिक्षा, दक्षता, अधिगम स्तर।

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण अर्थात शरीर, मन बुद्धि और आत्मा का विकास है। वास्तव में शिक्षा मूलतः ज्ञान के प्रसार का एक माध्यम है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सही मूल्य को पहुचाने तथा भावी पीढ़ी को चुनौतियों को तैयार करने का साधन ही किसी राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र की जनसाधारण की शिक्षा पर निर्भर है। अर्थात् शिक्षा ही राष्ट्र के विकास का मुख्य आधार है।

शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण अर्थात् शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास है। यदि शिक्षा मूल ज्ञान के प्रसार का एक माध्यम है तो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सही मूल्य को पहुंचाने तथा भावी सीढ़ी को चुनौतियों को तैयार करने का साधन है। किसी राष्ट्रो का विकास उस राष्ट्र की जनसाधारण की शिक्षा पर निर्भर है। अर्थात् शिक्षा ही राष्ट्र के विकास का प्रमुख आधार है। मनुष्य के शरीर में मन तथा आत्मा में अन्तर निहित शक्तियों का सर्वांगीण प्रकटीकरण ही शिक्षा है।

राममूर्ति समिति (1990) के अनुसार आज की परिस्थितियों में प्रशिक्षण कार्यक्रम को दक्षता आधारित बनाया जाना चाहिए। इसके द्वारा शिक्षकों में निम्नलिखित गुणों का विकास हो सकते है–

- शिक्षक में संज्ञानात्मक तथा मनःचलितपक्षों में शिक्षा देने की क्षमता।
- सृजनात्मक कार्य तथा नवाचारों के लिए अभिवृत्ति
- सम्पूर्ण शैक्षिक प्रकृया के व्यावसायीकरणके लिए तत्परता।
- विशेष क्षेत्रों के लिए योग्यता
- विकेन्द्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था में अपनी भूमिका की समझदारी।

प्राथमिक शिक्षा द्वारा छात्र/छात्राओं की ज्ञान की नीव रखी जाती है। यदि नीव मजबूत है तो उस पर कई मंजिल मकान बनाया जा सकता है, उसी प्रकार यदि प्राथमिक शिक्षा बच्चों की अच्छे यानि ठीक ढंग से प्रदान की जाये तो भविष्य में उसे किसी प्रकार की कोई परेशानी का सामना नही करना पड़ता है, और ज्ञान के लगातार वृद्धि होती है। समाज में बालक/बालिका अपने ज्ञान से भावी पीढ़ी का ज्ञान का वितरण अच्छे ढंग से कर सकते है और प्राथमिक शिक्षा द्वारा ही हमारे समाज और गाँव एवं देश की प्रगति हो जाती है। यदि हमारे प्रदेशों की प्राथमिक शिक्षा का विकास ठीक से हो तो उस प्रदेश की जनता का ज्ञानात्मक विकास बहुत ही संभव है। वाल्यावस्था मानव जीवन की प्रारंभिक अवस्था है। इस अवस्था में व्यक्ति की समस्त शारीरिक तथा मानसिक क्षमताओं तथा योग्यताओं का उदय, प्रस्फुटन तथा विकास होता है। बालक के जीवन का यह विकास काल ही व्यक्ति के "भावी जीवन का आधार" तैयार करता है। एक मासूम तथा कोमल बालक आगे जाकर पूर्ण परिपक्व पूर्णतः विकसित वयस्क के रूप में समाज तथा राष्ट्र का कर्णधार बनता है। अतः वाल्यकाल को जीवन का 'शिक्षण काल' कहना उचित ही है, क्योंकि इस अवस्था में बालक अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करता है। इसकी भाषा तथा कौशल का विकास होता है एवं ज्ञान तथा शिक्षण के आधार पर व्यक्ति की जीवन शैली का निर्माण होता है, जिसके आधार पर ही इसका सम्पूर्ण भावी जीवन नियंत्रित तथा निर्देशित होता है।

यह आवश्यक हो जाता है कि बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों जैसे – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक तथा चारित्रिक आदि का समुचित एवं सर्वांगीण विकास हो। ऐसा तभी संभव है जब बालक के माता–पिता, अभिभावक तथा परिवार के अन्य सदस्य एवं शिक्षक को उसके प्रति मनोविज्ञान व्यवहार करने का पर्याप्त ज्ञान हो।

2. शोध की आवश्यकता एवं महत्व
प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में प्रारंभिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रारंभिक शिक्षा राष्ट्रीय विचार धारा एवं चरित्र निर्माण की कुंजी है। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार "मेरे विचार से जन साधारण की शिक्षा की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप है जो हमारे पतन के कारणों में से एक है, सम्पूर्ण राजनीति उस समय तक विफल होती रहेगी। जब तक भारत में जनसाधारण को एक वार फिर से भली–भांति शिक्षित नही किया जाएगा।

शिक्षा से एक ऐसे समाज की रचना हो जो सत्ता व्यवसाय नियम कानून नागरिकता राष्ट्रीयता और सेवा के संस्कार दे, उच्च ज्ञान और विचार दे, शोध और नवाचार देकर चरित्र निर्माण में सहायक हो। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण म.प्र. के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का आंकलन किया जा सके जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. उद्देश्य

कोई ज्ञान या कोई अन्वेषण उद्देश्य विहीन नहीं होता है। अतः इस शोध के भी कतिपय उद्देश्य हैं। उद्देश्य के महत्व को बताते हुए जॉन डीवी महोदय[1] ने कहा है– ''किसी शैक्षिक अनुसंधान परियोजना पर तब तक कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए जब तक उस अध्ययन के परिणाम किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति एवं प्रक्रिया को प्रभावकारी ढंग से श्रेष्ठतम बनाने की संभावना प्रस्तुत नहीं कर देते।'' अतः शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं–

1. शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि का पता लगाना।
2. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर का अध्ययन करना।
3. प्रशिक्षण पश्चात शिक्षकों में विकसित दक्षता एक कौशल का कक्षा शिक्षण में प्रभावशीलता का आकलन करना।

4. परिकल्पनाएँ

शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

मौलि के अनुसार – "परिकल्पना अनुसंधान की दिशा स्पष्ट करती है जिससे शोधकर्ता को निरर्थक तथ्यों के संग्रह से मुक्ति मिल जाती है। इसी कथन को वान डालेन के अनुसार परिकल्पना शोध समस्या तथा समस्या समाधान के बीच एक सेतु का निर्माण करती है जिसमें समस्या की सीमाओं का स्पष्टीकरण तथा संगत एवं असंगत तथ्यों का निर्धारण हो जाता है। परिकल्पना किसी भी शोध कार्य के लिए शोधकर्ता को पथ प्रदर्शक या मार्गदर्शन प्रदान करती है। परिकल्पना शोधार्थी के लिए प्रकाश की भांति कार्य करती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है।
2. दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर में लगातार सुधार हो रहा है।

5. शोध अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्योंथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज है। अतः रीवा जिला अन्तर्गत स्थित प्राथमिक व उच्च प्राथमिक (प्रारंभिक शिक्षा स्तर) विद्यालय, जनपद शिक्षा केन्द्र तथा जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित कार्य इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये है।

लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 180 शिक्षक प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाध्यापक, ब्लाक शिक्षा समन्वयक, जिला परियोजना समन्वयक तथा 2–2 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्र–छात्राएँ कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया जायेगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनो दृष्टिकोण से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. शोध विधि

शोध क्षेत्र रीवा जिले के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रशिक्षक व अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

7. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कौल, लोकेश (1998)[1] शर्मा, आर.ए. (1998)[2], मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005)[3], पाठक, पी. डी. एवं मंगल, एस.के. (2013)[4], गुप्ता, एस.पी. (1997)[5], सिंह अरूण कुमार (2001)[6] एवं त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन (2007)[7] शुक्ला रमा शंकर (1989)[8] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

8. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना – 1 "शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है।"

सारणी 1: शिक्षकों की प्रशिक्षणोपरान्त व्यवसायिक दक्षता एवं शैक्षिक ज्ञान में वृद्धि का अध्ययन

क्र.	प्राप्त जानकारी के स्त्रोत	कुल संख्या	शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि सम्बन्धी अभिमत						व्यवसायिक दक्षता के वृद्धि सम्बन्धी अभिमत					
			पूर्ण सहमत		आंशिक सहमत		असहमत		पूर्ण सहमत		आंशिक सहमत		असहमत	
			सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	180	140	77.77	40	22.22	–	–	135	75.00	44	24.44	1	0.55
2.	प्रधानाध्यापक	90	72	80.00	16	17.77	2	2.22	72	80.00	15	16.66	3	3.33
3.	प्रशिक्षक	9	9	100.00	–	–	–	–	9	100.00	–	–	–	–
4.	अभिभावक	180	138	76.66	39	21.66	03	1.66	140	77.77	38	21.11	2	1.11
5.	छात्र	900	306	34.00	459	51.00	135	15.00	306	34.00	459	51.00	135	15.00

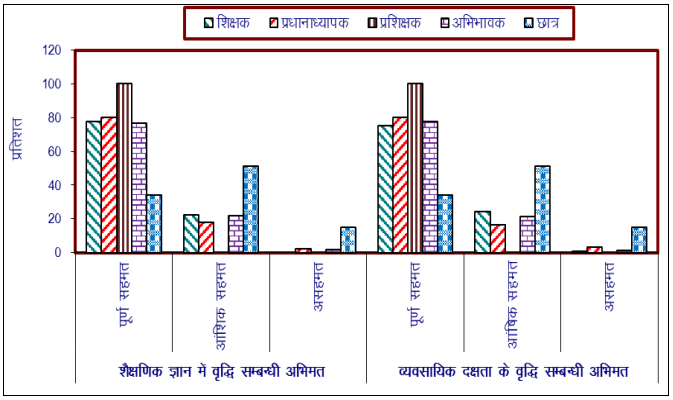

आरेख 1: शिक्षकों की प्रशिक्षणोपरान्त व्यवसायिक दक्षता एवं शैक्षिक ज्ञान में वृद्धि का अध्ययन

सारणी क्रमांक 1 के व्याख्या एवं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि स्पष्ट होता है कि 77.77 प्रतिशत शिक्षक अपने शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि से पूर्ण रूप से सहमत है। 22.22 प्रतिशत शिक्षक आंशिक रूप से सहमत है तथा 75 प्रतिशत शिक्षक व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि से पूर्ण सहमत है। 24.44 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत है। 0.55 प्रतिशत शिक्षक असहमत है। 80 पतिशत प्रधानाध्यापक अपने शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान के प्रति पूर्ण सहमत है तथा 17.77 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत और 2.22 प्रतिशत असहमत है। 80 प्रतिशत शत व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि सम्बन्धी पूर्ण सहमत है तथा 16.66 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत है। लेकिन 3.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक अहसमत है। साथ ही 100 प्रतिशत प्रशिक्षक अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण बाद वृद्धि के प्राप्त पूर्ण सहमत है। साथ ही 76.66 प्रतिशत अभिभावक, शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान के पूर्ण सहमत है तथा 21.66 प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत है। 1.66 प्रतिशत अभिभावक शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान के वृद्धि से असहमत है। अब 77.77 प्रतिशत अभिभावक अपने शिक्षकों के व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि पूर्ण सहमत है। 21.11 प्रतिशत आंशिक असहमत तथा 1.11 प्रतिशत अभिभावक असमत है। 34.00 प्रतिशत छात्र, शिक्षकों के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि से पूर्ण सहमत है, तथा 51.00 प्रतिशत छात्र आंशिक रूप से सहमत है लेकिन 15.00 प्रतिशत छात्र असहमत है।

सारणी 2: रीवा जिले में प्रशिक्षणोपरान्त शिक्षकों की शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यवसायिक दक्षता में वृद्धि का अध्ययन (प्रारंभिक स्तर के गणित विषय के शिक्षकों का प्रशिक्षण पूर्व एवं पश्चात् में ग्रेड विभाजन)

क्र.	ग्रेड	प्रशिक्षण के शुरुआत में लिया गया टेस्ट		प्रशिक्षण के बाद (अंत) में लिया गया टेस्ट		प्रशिक्षण के बाद व्यवसायिक दक्षता एवं शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि/कमी
		कुल संख्या 180		कुल संख्या 180		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	ए	36	20.00	74	41.11	+21.11
2.	बी	54	30.00	67	37.22	+7.22
3.	सी	60	33.33	30	16.66	−16.67
4.	डी	30	16.66	9	5.00	−11.66

सारणी 2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षण के शुरुआत में लिये गये प्री टेस्ट तथा अन्तिम में लिये गये परीक्षण से स्पष्ट है कि पहले की सापेक्ष अन्तिम परीक्षण टेस्ट में ए ग्रेड प्राप्त करने वाले शिक्षकों की संख्या में 21.11 प्रतिशत तथा बी ग्रेड प्राप्त करने वाले शिक्षकों की संख्या 7.22 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी है, लेकिन ग्रेड सी प्राप्त कने वाले शिक्षकों की संख्या में 16.67 प्रतिशत की कमी दर्ज हुयी तथा डी ग्रेड पाने वाले शिक्षकों की संख्या में 11.66 प्रतिशत की कमी आयी है। अतः प्रशिक्षण के बाद व्यावसायिक दक्षता एवं शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि हुयी है।
अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना – 2 : दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर में लगातार सुधार हो रहा है।

सारणी 3: प्रशिक्षण के बाद शिक्षण प्रक्रिया से छात्र/ छात्राओं के अधिगम में वृद्धि का अध्ययन

क्र.	प्राप्त जानकारी के स्त्रोत	कुल संख्या	शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण से कौशल में वृद्धि सम्बन्धी अभिमत						अधिगम वृद्धि सम्बन्धी अभिमत					
			पूर्ण सहमत		आंशिक सहमत		असहमत		पूर्ण सहमत		आंशिक सहमत		असहमत	
			सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत	सख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	180	135	75.0	35	19.44	10	5.55	135	75.0	35	19.44	10	5.55
2.	प्रधानाध्यापक	90	54	60.0	20	22.22	16	17.77	54	60.00	20	22.22	16	17.77
3.	प्रशिक्षक	9	7	77.77	–	–	2	22.22	7	77.77	–	–	2	22.22
4.	अभिभावक	180	130	72.22	38	21.11	12	6.66	130	72.22	38	21.11	12	6.66
5.	छात्र	900	297	33.0	396	44.00	207	23.00	297	33.00	396	44.00	207	23.00

सारणी 3 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 33.0 प्रतिशत छात्र शिक्षक सहायक सामग्री निर्माण के कुशलता एवं उनके प्रयोग में वृद्धि से पूर्ण सहमत है, आंशिक रूप से 44.00 प्रतिशत छात्र तथा 23.00 प्रतिशत छात्र असहमत है। तथा 75 प्रतिशत शिक्षक सहायक सामग्री, निर्माण कुशलता में वृद्धि एवं उनके प्रयोग में वृद्धि से पूर्व सहमत है। 19.44 प्रतिशत शिक्षक आंशिक सहमत तथा 5.55 प्रतिशत शिक्षक असहमत है। 60.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, वृद्धि सम्बन्धी पूर्ण सहमत है। 22.22 प्रतिशत आंशिक एवं लेकिन 17.77 प्रतिशत असहमत है। साथ ही 77.77 प्रतिशत प्रशिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण कौशल वृद्धि से पूर्ण सहमत है। 22.22 प्रतिशत असहमत है। साथ ही 72.22 प्रतिशत अभिभावक सहायक शिक्षण सामग्री के प्रयोग से पूर्ण सहमत एवं 21.11 प्रतिशत आंशिक सहमत और 6.66 प्रतिशत अभिभावक असहमत है।
अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

9. निष्कर्ष

शोधार्थी द्वारा शोध क्षेत्र के अनेक विद्यालयो के शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रशिक्षक व अभिभावकों के अभिमत पर आधारित निष्कर्ष प्राप्त हुआ। 77.77 प्रतिशत शिक्षक, 80.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, शत–प्रतिशत प्रशिक्षक, 76.66 प्रतिशत अभिभावक व 34.00 प्रतिशत छात्र अपने शैक्षणिक ज्ञान में वृद्धि से पूर्ण रूप से सहमत है। इसी प्रकार 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 80.00 प्रधानाध्यापक, शत–प्रतिशत प्रशिक्षक, 77.77 प्रतिशत अभिभावक तथा 34.00 प्रतिशत छात्र व्यवसायिक दक्षता के वृद्धि सम्बन्धी अभिमत से

सहमत है। 75.00 प्रतिशत, शिक्षक, 60.00 प्रधानाध्यापक, 77.77 प्रतिशत प्रशिक्षक, 72.22 प्रतिशत अभिभावक व 33.00 छात्र शिक्षक सहायक सामग्री निर्माण से कौशल में वृद्धि और अधिगम वृद्धि सम्बन्धी अभिमत से पूर्ण सहमत है। अतः शिक्षको के शैक्षणिक ज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता में प्रशिक्षण पश्चात् वृद्धि हुयी है और दक्षता आधारित शिक्षण प्रक्रिया के पश्चात् छात्रों के अधिगम स्तर में लगातार सुधार हो रहा है।

10. संदर्भ

1. कौल, लोकेश (1998)– शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिय हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली।
2. शर्मा, आर. ए. (1998)– ने शिक्षा अनुसंधान, और लाल बुक डियो, मेरठ।
3. मंगल, एस. के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, 2005.
4. पाठक, पी. डी. एवं मंगल, एस. के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013.
5. गुप्ता, एस. पी. : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997.
6. सिंह अरूण कुमार :''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'' चतुर्थ संस्करण, मोतीलाल नगर बनारसीदास दिल्ली, 2001.
7. त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन : शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007.
8. शुक्ला, रमा शंकर : शिक्षक शिक्षा – दशा एवं दिशा, जयपुर, 1989.